ANSWERS

1. Ans. D.
   राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप-रेखा 2005 अधिगमकर्ता रचनावादी उपागम पर बल देती है। क्योंकि यह गतिविधियों में शामिल करते हुए शिक्षार्थियों की सक्रिय भागीदारिता पर केंद्रित है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में अनेक परस्परसंबंधित आयामों को ध्यान में रखा जाता है जैसे:ज्ञान की प्रकृति, बच्चों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, मानव विकास की प्रकृति। इसमें ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना, पढ़ाई रटत प्रणाली से मुक्त हो यह सुनिश्चितकरना।
2. Ans. D.
   पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत के अनुसार पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों में सह-सम्बन्ध होना चाहिए ताकि शिक्षक हर विषयों को एक-दूसरे से लिंक करके अध्ययन को पूर्ण कर सके। इसमें अवकाश का सदुपयोग तथा अग्रदर्शी होना चाहिए।
3. Ans. C.
   भाषा-अर्जन और भाषा अधिगम में बालक अपने वातावरण में जिस प्रकार लोगों को बोलते हुए सुनता है। लिखता हुआ देखता है। उसे ही अनुकरण द्वारा सीखने का प्रयास करता है। सार्थक अधिगम ठोस चीजों एवं मानसिक धोतकाेंं को प्रस्तुत करने व उनमें बदलाव लाने की उत्पादक प्रक्रिया है न कि जानकारी इकट्ठा कर उसे रटने की प्रक्रिया है।
4. Ans. B.
   शिक्षक की इतनी योग्यता अवश्य होनी चाहिए कि वह बच्चों की मातृभाषाओं की संरचनाओं को समझ सके और कक्षा-कक्ष भाषाओं को एक दूसरे से सामजस्य स्थापित करके और भाषाओं में संवाद करने की क्षमता को पूर्णतः विकसित करें।
5. Ans. A.
   अनुदेशन की अवस्था का सही पूर्व व्यवहार-पारस्परिक क्रिया- उत्तर व्यावहारिक अनुदेशन है। अनुदेशन सूचना ज्ञान (परामर्श) देना होता है, जो शिक्षक द्वारा सम्पन्न होने वाली प्रकिया है।

   अनुदेशन की अवस्थायें-
   (i) पूर्व व्यवहार (तैयारी या पूर्व क्रिया), (ii) पारस्परिक क्रिया (प्रोग्राम का लिखना या अंत:क्रिया), (iii) उत्तर व्यावहारिक अनुदेशन (जाँच एवं मूल्याङ्कन या उत्तर क्रिया)
6. Ans. D.
   उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण में मुहावरेदार भाषा का अनिवार्यतः प्रयोग करने पर बल इतना महत्वपूर्ण नहीं है। भाषा की महत्ता जानने से उनके शिक्षण की आवश्यकता का ज्ञान हो जाता है। इसके साथ ही शिक्षकको उन सभी उद्धेश्यों से पूर्ण परिचित हो जाना चाहिए। जिनके वह भाषा पढ़ाना चाहता है। उद्धेश्यों की जानकारी ही उसे सफल शिक्षक बनाती है।
7. Ans. B.
   उच्च प्राथमिक स्तर भाषा शिक्षण का उद्धेश्य केवल व्याकरणों के नियमों को रटवाना नहीं अपितु उसके अंदर ज्ञानात्मक उद्धेश्य, अभिवृत्यात्मक उद्देश्य , सृजनात्मक उद्देश्य को बढ़ावा देना भाषा-शिक्षण के सभी उद्देश्य एक-दूसरे के सहयोगी हैं।
8. Ans. D.
   कहानी के माध्यम से भाषायी कौशलों, मुहावरों, लोकोक्तियों, अर्थ-ग्रहण आदि पक्षों, रचना शिक्षण आदि को सुगमता से सिखाया जा सकता है। इसके द्वारा श्रवण कौशल व मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास है। कहानी द्वारा पढ़ाने में छात्रों की पढ़ने में रूचि विकसित होती है। कहानी तर्क, विवेक और बच्चों की कल्पनाशक्ति, सृजनात्मकता और चिन्तन को बढ़ावा देती है।
9. Ans. D.
   "शैक्षिक तकनीकी" दो शब्दों से मिलकर बना है- शिक्षा और तकनीकी। शैक्षिक तकनीकी का साधारण अर्थ यह है कि "विज्ञान की नवीनतम तकनीकियाँ व सिद्धांतों का प्रयोग कर बालक के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना शैक्षिक तकनीकी कहलाता है"। शैक्षिक तकनीकी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **जोन्स ब्रायनमर ने 1967** में किया था।

10. Ans. D.
प्रत्यक्ष विधि के माध्यम से दूसरी भाषा को बिना किसी के सहायता से भाषा पढ़ाया जाता है। यह साध्य का काम करता है। जब हम भाषा को पढ़ते हैं तो इसके तत्वों को जानने-समझने का प्रयास करते हैं। वह भाषासाध्य होती है।
11. Ans. A.
उपरोक्त शब्दों में 'कौतूहल' वर्तनी के अनुसार शुद्ध रूप है बाकी सभी शब्द वर्तनी के अनुसार गलत शब्द है। कौतूहल का अर्थ कुतुहल होता है।
12. Ans. D.
उपरोक्त शब्दों में 'कृतार्थ' वर्तनी के अनुसार शुद्ध रूप है बाकी सभी शब्द वर्तनी के अनुसार गलत शब्द है। कृतार्थ का अर्थ कृत-कृत्य होता हैं।
13. Ans. D.
अन्धा कुआँ नाटक के नाटककार (लेखक) लक्ष्मीनारायण लाल हैं। लक्ष्मीनारायण लाल स्वातन्त्र्योत्तर लाल के नाटककार हैं जिनके समकालीन लेखक धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, मन्नू भण्डारी आदि हैं। लक्ष्मीनारायण के प्रमुख नाटक हैं अन्धा कुआँ, दर्पण, मादा कैक्टस, सूर्यमुख, मिस्टर अभिमन्यु, कर्फ्यू, अब्दुल्ला दीवाना, व्यक्तिगत, एक सत्य हरिश्चन्द्र, सगुन पंछी तथा सबरंग मोहभंग आदि।
14. Ans. C.
महाकवि भूषण रीतिकाल के कवि हैं। इन्होंने छत्रसाल दशक, शिवाबावनी, शिवराज भूषण आदि रचनाएँ लिखी है।
इन्होंने ये रचनाएँ 17 वीं शताब्दी में रचित की हैं। रीतिकाल के अन्य कवियों में केशवदास, मतिराम भिखारीदास, पदमाकर, रसिकगोविन्द, बिहारी, घनानन्द, रहीम आदि प्रमुख हैं।
15. Ans. C.
कवितावाली, गीतावली, विनय-पत्रिका, कृष्णगीतावाली, दोहावली आदि सभी रचनाएँ गोस्वामी तुलसीदास जी की महत्तपूर्ण रचनाएँ हैं।
16. Ans. C.
ट वर्ग के वर्ण ट, ठ, ड, ढ, ण सभी मूर्धन्य व्यंजन होते है। यह वर्ण कठोर तालु के मध्य भाग तथा जीभ की उल्टी हुई नोंक के निचले भाग से स्पर्श होकर उच्चारित होते हैं, ऐसी स्थिति में उत्पन्न ध्वनि को मूर्धन्यउ कहतेहैं।
17. Ans. D.
परमाल रासो एक आल्हा खण्ड है जिसकी रचना 13वीं शताब्दी में महोबा के राजा परमालदेव के सामन्त आल्हा और ऊदल की वीरता के वर्णन पर, जगनिक द्वारा रचित की गई।
18. Ans. B.
कपूर एक तद्भव शब्द है, इसका तत्सम रूप कर्पूर होता है। संस्कृत के कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो हिंदी में भी बिना परिवर्तन के प्रयुक्त होते हैं . उन शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं . तद्भव शब्द वे शब्द हैं जिनमे थोडा सा परिवर्तन करके हिंदी में प्रयुक्त किया जाता हैं
19. Ans. C.
अन्धेर नगरी, सत्य हरिश्चन्द्र, कर्पूर मंजरी, मुद्राराक्षस, भारत दुर्दशा तथा वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के मौलिक नाटक हैं।
20. Ans. B.
सूरसागर, ब्रजभाषा में महाकवि सूरदास द्वारा रचे गए कीर्तनों-पदों का एक सुंदर संकलन जो शब्दार्थ की दृष्टि से उपयुक्त और आदरणीय है। इसमें प्रथम नौ अध्याय संक्षिप्त है, पर दशम स्कन्ध का बहुत विस्तार हो गयाहै। इसमें भक्ति की प्रधानता है। इसके दो प्रसंग कृष्ण की बाल-लीलाश् और भ्रमर-गीतसारश् अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं।
21. Ans. B.
अत्याधिक शब्द में "अति" उपसर्ग है | अति का अर्थ है "अधिक" जबकि अभि का अर्थ सम्मुख, निकट आदि | अधि का अर्थ ऊपर अ का अर्थ अभाव होता है |
22. Ans. D.
प्रत्यय वे शब्दांश होते है | जो किसी शब्द के बाद में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं जैसे "मीठा" शब्द में आई प्रत्यय जोड़कर "मिठाई" शब्द बनाया गया है |
23. Ans. A.
"रमणीय" शब्द में "अनीय" प्रत्यय है "रम" शब्द में अनीय प्रत्यय जोड़कर रमणीय शब्द का निर्माण किया जाता है | योग्यता वाचक कृदन्त में अनीय, क्तवा, आऊ आदि प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है |

24. Ans. A.
निर्भय शब्द में निर उपसर्ग है | निर का अर्थ है | बाहर तथा भय का अर्थ है | डर जबकि निर्भय का अर्थ है | निडर |

25. Ans. B.
अनुकूल शब्द में "अनु" उपसर्ग है | "अनु" का अर्थ है "पीछे" अनामिका शब्द संज्ञा है जबकि अनादि शब्द का पर्यायवाची है असीम, अनन्त आदि

26. Ans. B.
प्रत्यय उन शब्दांश को कहते हैं जो किसी अन्य शब्द के अन्त में लगाये जाते हैं। इनके लगाने से शब्द के अर्थ में भिन्नता या वैशिष्ट्य आ जाता है। 'घुमक्कड़' शब्द में अक्कड़ प्रत्यय है।

27. Ans. D.
हमे अपने कर्तव्य का पालन निष्ठांपुर्बक करना चाहिए, पालन शब्द से वाक्य का अर्थ स्पष्ट होता है अत: यह वाक्य के लिए उपयुक्त है। संपादन का अर्थ अच्छी तरह से पूरा करना। संचालन का अर्थ परिचालन
संशोधन का अर्थ बदलाव करना होता है

28. Ans. C.
नाच न आवे **आँगन** टेढ़ा

29. Ans. C.
दिए गए शब्दों में अल्पजीवी का विलोम शब्द चिरंजीवी है अल्पजीवी शब्द का अर्थ है अल्पायु या कम आयु जीने वाला । चिरंजीवी का अर्थ चिरंजीवी, कृतज्ञ का अर्थ उपकार माननेवाला या एहसानमंद ।

30. Ans. D.
विलोम शब्द का अर्थ : ऐसे शब्द जिनके अर्थ विपरीतया उल्टा हों, उनशब्दों को विलोम शब्द कहते हैं।
दिए गए शब्दों में अपरान्ह का विलोम शब्द पूर्वान्ह है अपरान्ह शब्द का अर्थ दोपहर के बाद का समय है, पूर्वान्ह का अर्थ उषा काल का समय ।

31. Ans. C.
विलोम शब्द का अर्थ : ऐसे शब्द जिनके अर्थ विपरीतया उल्टा हों, उनशब्दों को विलोम शब्द कहते हैं।
दिए गए शब्दों में कृष्ण का विलोम शब्द शुक्ल है कृष्ण और शुक्ल दो अलग - अलग पक्ष होता है अमावस्या, पूर्णिमा, एकादशी विशेष दिन है।

32. Ans. C.
विलोम शब्द का अर्थ : ऐसे शब्द जिनके अर्थ विपरीतया उल्टा हों, उनशब्दों को विलोम शब्द कहते हैं।
दिए गए शब्दों में औचक का विलोम शब्द अक्सर है औचक शब्द के पर्यायवाची शब्द निम्न है, अचानक, एकदम, यकायक, औचट आदि है

33. Ans. D.
पर्यायवाची शब्द का अर्थ : ऐसे शब्द जिनके अर्थ समान हों, पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। दिए गए शब्दों में धरा का सम्बंधित/पर्यायवाची शब्द रत्नगर्भा है धरा शब्द के अन्य पर्यायवाची शब्द निम्न है, धरित्री, क्षिति, उर्वी, भूमि, धरती, पृथ्वी, भू, धरणी, वसुंधरा, अचला आदि है

34. Ans. C.
पर्यायवाची शब्द का अर्थ : ऐसे शब्द जिनके अर्थ समान हों, पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। दिए गए शब्दों में अनल का सम्बंधित/पर्यायवाची शब्द पावक है अनल शब्द के पर्यायवाची शब्द निम्न है आग,अग्नि, वह्नि, हुतासन, कृशानु, वैश्वानर आदि है ।

35. Ans. A.
दिए गए शब्दों में स्थावर का विलोम शब्द जंगम है स्थावर शब्द का अर्थ स्थिर होता है जबकि जंगम का अर्थ गतिशील है।

36. Ans. B.
दिए गए शब्दों में अभिज्ञ का सम्बंधित/पर्यायवाची शब्द जानकार है अभिज्ञ शब्द के पर्यायवाची शब्द निम्न है। जानकार, बुद्धिमान आदि।

37. Ans. C.
एकार्थी शब्द का अर्थ: जिन शब्दों का प्रयोग अनेक शब्दो के स्थान पर किया जाए वे उन शब्दों को एकार्थी शब्द या एक शब्द कहलाते है।
जैसे विनयपूर्वक की जाने वाली प्रार्थना को निवेदन कहते है । अधिकारी से की जाने वाली प्रार्थना को आवेदन तथा स्वीकृति देने को अनुमति और मन की इच्छा को मन्नत कहते है।

38. Ans. C.
एकार्थी शब्द का अर्थ: जिन शब्दों का प्रयोग अनेक शब्दो के स्थान पर किया जाए वे उन शब्दों को एकार्थी शब्द कहते है ।
जैसे जो कल्पना से परे हो को कल्पनातीत कहते है तथा जिसकी कल्पना की जा सके उसे काल्पनिक कहते है और जो संभव न हो उसे असम्भव कहते है । जो अपने स्थान से डिग गया हो उसे च्युत कहते है ।

39. Ans. A.
गोधूलि शब्द का अर्थ है गो + धूल = अर्थात गायों के पैरों से उठने वाली धूल। पुराने समय में जब गायें जंगल से चरकर वापस आती थीं तो पता चल जाता था कि शाम होने वाली है। इसलिए इस समय विशेष को गोधूलिबेला कहने लगे। अर्थात संध्या का समय।

40. Ans. D.
जिसने इन्द्रियों को जीत लिया हो उसे जितेन्द्रिय कहते हैं।

41. Ans. A.
एकार्थी शब्द का अर्थ: जिन शब्दों का प्रयोग अनेक शब्दो के स्थान पर किया जाए वे उन शब्दों को एकार्थी शब्द या एक शब्द कहलाते है । जैसे रात्रि में घूमने वाला को निशाचर कहते है

42. Ans. D.
मुहावरे का अर्थ : कोई भी वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ व्यक्त करता हो तो उसे व्याकरण की भाषा मुहावरा कहते है।
एडी चोटी का जोर लगाना मुहावरे का अर्थ होता है - बहुत कोशिश करना ठोर दण्ड देना
वाक्य प्रयोग:नन्द ने परीक्षा पास करने के लिय एडी चोटी का जोर लगा दिया।

43. Ans. C.
मुहावरे का अर्थ : कोई भी वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ व्यक्त करता हो तो उसे व्याकरण की भाषा मुहावरा कहते है।
अक्ल पर पत्थर पड़ना मुहावरे का अर्थ होता है - बुद्धि भ्रष्ट होना
वाक्य प्रयोग: दीपक ने नैकरी छोड़ दी मनो उसके बुद्धि में अक्ल पर पत्थर पड़ गया है

44. Ans. A.
मुहावरे का अर्थ : कोई भी वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ व्यक्त करता हो तो उसे व्याकरण की भाषा मुहावरा कहते है।
यथा राजा तथा प्रजा मुहावरे का अर्थ होता है - जैसा स्वामी वैसा सेवक

45. Ans. A.
'कौन' सर्वनाम का गुणवाचक शब्द **कैसा** होता है|

46. Ans. A.
"आम" शब्द तद्भव है, गौ, सर्प आम्र शब्द तत्सम है | तदभव शब्द वे शब्द होते हैं | जो संस्कृत भाषा के हैं | लेंकिन हिंदी में उनका सरल रूप प्रयोग होता है |

47. Ans. D.
विशेषण के चार भेद होते हैं | गुणवाचक विशेषण, परिमाण वाचक विशेषण, संख्या वाचक विशेषण, संकेत वाचक विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं |

48. Ans. A.
"इधर" शब्द में स्थानवाचक क्रिया विशेषण है| स्थान वाचक क्रिया विशेषण में प्राय: ये शब्द प्रयुक्त होते हैं | जैसे - वहां, यहाँ, इधर, उधर, किधर, दायें आदि | उसे इधर आना है वाक्य में दिशा वाचक क्रिया विशेषण प्रयुक्त होता है |

49. Ans. C.
दिए गए कवियों में वीर रस के प्रमुख कवि भूषण जी हैं | इन्होने अपने काव्य में वीर रस का प्रयोग किया | इनके काव्य को पढ़कर योद्धाओं में उत्साह और शक्ति आ जाती है |

50. Ans. A.
"साकेत" के रचनाकार मैथिलीशरण गुप्त जी हैं | गुप्त जी ने "साकेत" में उर्मिला की विरह व्यथा और कैकेयी के संताप को व्यक्त किया है |

***